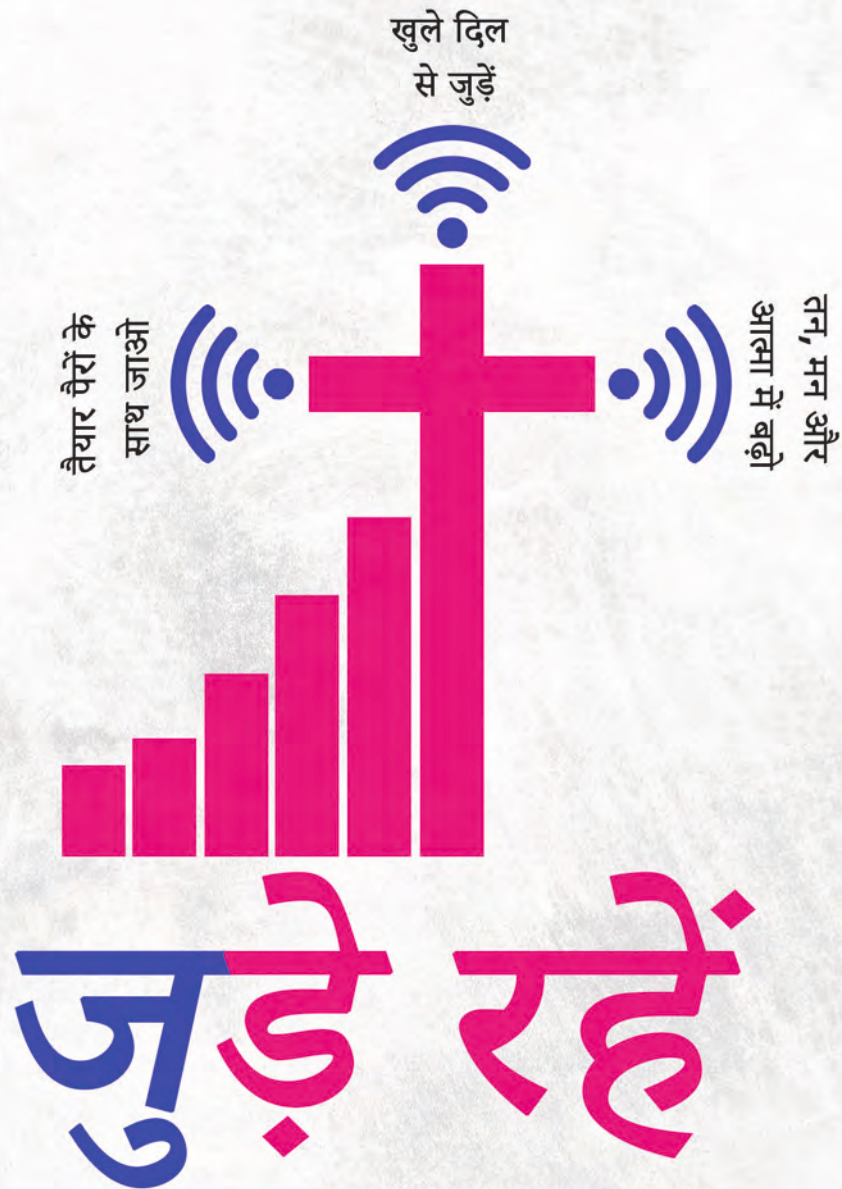




युवा जीवन

अगस्त 2022



प्रस्तावना

सभी युवा दिलों को, हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम पर प्यार भरा अभिनंदन !

आज की दुनिया में, लोग अक्सर संबंध के बारे में बात करते हैं। हालांकि आधुनिक तकनीक लोगों को वस्तुतः संबंध बनाने में सक्षम बनाती है, पर वे वास्तविकता में अक्सर अपने फासलों को बढ़ा लेते हैं।

प्रमुख समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के अनुसार, कई परिवार भ्रम और अलगाव से गुजरते हैं और सोशल मीडिया पर व्यक्तिगत जानकारी को अधिक साझा करने के कारण, हाल के दिनों में कई विवाह तलाक में समाप्त हो जाते हैं। युवा जो ऑनलाइन वीडियो खेल के आदी हैं, उनके काम और पढ़ाई के प्रति अलगाव के प्रमुख लक्षण दिखाते हैं। वेब श्रृंखला को देखने में घंटों की नींद हराम करने के कारण, एकाग्रता की कमी होने से, कई लोग अपनी नौकरी खो रहे हैं।

सांसारिक जीवन और उसके सुखों के प्रति इस लगाव के कारण, कई लोगों के जीवन में कई वियोग और कष्ट होते हैं। आज के समाज में झूठे संबंध प्रचलित हैं। स्त्री और पुरुष के बीच सुंदर संबंध अब विशिष्ट नहीं हैं। पुरुषों और महिलाओं ने अपने समान लिंग के अन्तर्गत धर्मभ्रष्ट रिश्ते बनाने शुरू कर दिए हैं। आज के वातावरण में, इन रिश्तों को 'अनोखा' कहना बहुत निराशाजनक है। चूंकि आज, दुनिया इतने सारे गलत संबंधों में है, कि लोग भी स्वयं को अधिक से अधिक दोष दे रहे हैं।

जब मनुष्य स्वयं को उस रचयिता से अलग कर लेता है जिसने उसे बनाया है, तो पाप और गलतियाँ बढ़ना तय है। आज हम ऐसे ही समाज में रह रहे हैं। केवल तभी उद्धार हो सकता है, जब ये लोग यीशु से जुड़ें।

उन्हें भी यीशु की जरूरत है। जब तक आखिरी भारतीय यीशु के बारे में नहीं जान लेता, तब तक इसके लिए कामना करें! काम करें और अंत तक प्रयास करें! जब हमारे लोगों की आंखें खुलेंगी, तो उनके आंसू पोंछे जाएंगे। इन लोगों को यीशु के साथ जोड़ने के लिए वफादारी से काम करें।

मसीह के मिशन में,
अविनाश



आइए हम प्रार्थना करें और विजयी हों

आदर्श प्रार्थना- प्रभु की प्रार्थना

हम जो काम करते हैं वह हमेशा सही रहेगा, जब हम उन्हें सही लोगों से सीखते हैं। इस प्रकार परमेश्वर जिसने हमें बनाया है वह एक आम आदमी के रूप में 'यीशु' के नाम से दुनिया में आया और हमें यह सिखाने के लिए कि "इस दुनिया में कैसे रहना है?" वह इस संसार में दूसरों के लिए एक आदर्श के रूप में रहा और हमें "उससे सीखने" का निर्देश दिया (मत्ती 11:29)।

जैसे-जैसे हम प्रार्थना के महत्व को सीखना जारी रखते हैं, आइए हम कुछ ऐसी बातों पर एक नज़र डालें जो हमें यीशु के प्रार्थना जीवन से सीखनी चाहिए।

यीशु की सुबह की प्रार्थना

भोर को जब अँधेरा ही था, तब यीशु उठा, और घर से निकला, और एकांत स्थान पर चला गया, जहाँ उन्होंने प्रार्थना की। (मरकुस 1:35)।

यीशु हमेशा अपने 12 चेलों से घिरा रहता था। वे उसके साथ रहे! उन्होंने एक साथ खाया! और उन्होंने एक साथ यात्रा की! यहां तक कि जब उनके 12 शिष्य उनके साथ थे। यीशु सवेरे जल्दी उठे और अकेले प्रार्थना करने चले गए। इस तरह उन्होंने प्रत्येक दिन की शुरुआत की।

प्रिय मित्रों! आप अपने दिन की शुरुआत कैसे करते हैं? आप किस समय जागते हैं और प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं? खुद को परखें।

यीशु की एकांत प्रार्थना

"और जब उस ने भीड़ को विदा किया, तब वह अकेला प्रार्थना करने को पहाड़ पर चढ़ गया, जब सांझ हुई, तो वह अकेला था।" (मत्ती 14:23)।

यीशु ने अपने चेलों को विदा किया, और एक पहाड़ पर चढ़ गया, और एकांत में पिता से प्रार्थना की।

शायद आप पढ़ रहे हैं या काम कर रहे हैं! अपना दैनिक कार्य समाप्त करने के बाद, जाओ और शाम को कम से कम एक घंटे के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में प्रतीक्षा करें। यीशु ने हमें न केवल सुबह बल्कि शाम को भी एक आदर्श के रूप में अपनी प्रार्थना के माध्यम से प्रार्थना करने का महत्व दिखाया है।

यीशु की पूरी रात प्रार्थना

उन दिनों में ऐसा हुआ कि वह प्रार्थना करने को पहाड़ पर गया, और रात भर परमेश्वर से प्रार्थना करता रहा। (भाग्य 6:12)

इस पद में, हम यीशु को पूरी रात प्रार्थना करते हुए देखते हैं। महीने में कम से कम एक बार, नाश होने वाली आत्माओं के लिए पूरी रात परमेश्वर की उपस्थिति में प्रार्थना करें। आप अपनी प्रार्थनाओं में अंतर देखेंगे।

प्रिय युवा लोगों, यीशु की आदर्श प्रार्थना को सीखने के बाद, क्या आप इन्हें अपने दैनिक जीवन में लागू करने के लिए स्वयं को प्रतिबद्ध करेंगे?



बहन जेफ़लिन स्टेनी

एक विदेशी देश में यीशु का प्रचार करना ..

बहन जेफ़लिन स्टेनी का जन्म एक रोमन कैथोलिक परिवार में हुआ था। उसे पता चला कि यीशु ही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है और उसने उसे अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया। अब वह एक ऐसे राष्ट्र में चिकित्सा और सुसमाचार प्रचार का काम कर रही है जहाँ प्रचार करना एक बड़ा जोखिम है। आइए आज हम इस युवा बहन के अनुभव को सुनें जो सुसमाचार प्रचार करती है और कई लोगों को उद्धार की ओर ले जाती है।

अपने बचपन और परिवार के बारे में बताएं :

मैं कन्याकुमारी जिले के एक रोमन कैथोलिक परिवार में पैदा हुई थी। मेरे पिता जी एक व्यापारी हैं और मेरी माँ घर में रहती हैं। मेरी बहन ने अपनी दंत चिकित्सा की पढ़ाई पूरी कर ली हैं। मैं किर्गिस्तान में अपनी चिकित्सा का तीसरा वर्ष कर रही हूँ। मैं और मेरी बहन बचपन से ही बहुत पढ़ने वाले हैं। परमेश्वर ने मुझे छोटी उम्र में ही अच्छी बुद्धि और प्रतिभा दी थी। बचपन से ही हम अपने माता पिता के आज्ञाकारी हैं।



बहन जेफ़लिन अपने परिवार के साथ

अपने बचपन के बारे में कहते हुए, आपने कहा कि आप एक रोमन कैथोलिक परिवार में पैदा हुए: आप एक बच्चे के रूप में कैसे बड़े हुए?

मैं कैथोलिक परिवार से संबंध रखती हूँ। बचपन में मैं अपने परिवार के सदस्यों के दवाब के कारण कैथोलिक चर्च जाती थी। परंतु मैं, मेरी माँ और मेरी बहन साथ में प्रार्थना करते थे। हर रोज पारिवारिक प्रार्थना एक प्रथा है। फिर मेरी माँ वचन को पढ़ती और हमें सिखाती थी। हमारी माँ ने हमारा पालन पोषण यह कहते हुए करा कि मूर्ति पुजा करना गलत है और वह यह भी कहती थी कि हमें सिर्फ यीशु की ही आराधना करनी चाहिए। इसलिए हम मूर्तियों की पुजा नहीं करते। इस प्रकार, हमें पता चला कि यीशु ही परमेश्वर

हैं। छोटी उम्र से ही मैं आपनी सारी चिंता यीशु को बता देती थी। मैं बचपन से ही अपने पिता को यीशु के बारे में बता रही हूँ। मैं उनको प्रार्थना करने और वचन पढ़ने को कहती

रहती थी। परंतु उन्होंने परमेश्वर के प्रेम का पूर्ण अनुभव नहीं किया था। इसलिए एक परिवार होते हुए हम उनके उद्धार के लिए प्रार्थना करते थे। मैं अपने परिवार की शांति और खुशी के लिए प्रार्थना करती थी। हमारे घर में परमेश्वर के कुछ सेवकों का आना और प्रार्थना करना एक थी। मेरा प्रारंभिक मसीह जीवन ऐसा ही था।

पको जब पता चल गया कि यीशु ही परमेश्वर हैं: और क्या उसके बाद आप ने आत्मिक चर्च जाना शुरू किया।

जब प्रभु के सेवक हमारे घर में प्रार्थना करने के लिए आते हैं, तो हम स्तुति के गीत गाते, अन्य भाषा में प्रार्थना करते

और उनके जैसे वचन के बारे में और जानना चाहते, और इसके लिए लगातार प्रार्थना करना शुरू कर दिया। उन दिनों में हम पवित्र आत्मा के बारे में पूरी तरह से अज्ञान थे। हमें नहीं पता था कि अन्य भाषा का अर्थ क्या है। हम बाइबल के बारे में ज्यादा नहीं जानते थे।



हम अक्सर “थिरापिन वासल प्रार्थना” में शामिल होते थे और मोहन अंकल की शिक्षाओं को ध्यान से सुनते थे। इस अवस्था में, हमने अपनी पारिवारिक

प्रार्थना में यीशु से प्रार्थना करने शुरू किया, कि हम एक आत्मिक चर्च में शामिल होना चाहते हैं। कुछ ही वर्षों में परमेश्वर ने हमारी प्रार्थना को सुना और उसका उत्तर दिया। मैं, मेरी माँ और मेरी बहन ने एक आत्मिक चर्च जाना शुरू किया।

अद्भुत! तो आप किसी तरह एक आत्मिक चर्च में जाने लगे...क्या आपके जीवन में कुछ बदलाव हुआ?

चर्च जाने के बाद हमारे आत्मिक जीवन में कई बदलाव होने लगे। लेकिन मैं अभी भी सांसारिक चीजों में फंसी हुई थी, जैसे कि फिल्में देखना, सांसारिक दोस्तों से बात करना और समय बर्बाद करना अभी भी मेरे जीवन में जारी था।

इस समय 12वीं पास करने के बाद, मेरी इच्छा डॉक्टर बनने की थी। इसलिए मैंने एक साल नीट की परीक्षा के लिए पढ़ाई की। मैं एक साल तक पढ़ाई नहीं करना चाहती था। लेकिन पापा की जिद की वजह से मैंने किया। लेकिन मुझे वह अंक नहीं मिले जिसकी मुझे उम्मीद थी, जिस वजह से मेरे लिए मैरिट में अध्ययन करने का कोई मौका नहीं था। इसलिए मैंने दंत परामर्श में भाग लिया और दंत चिकित्सा का अध्ययन करने के लिए एक कॉलेज में सीट प्राप्त की।

लेकिन मुझे यह अध्ययन करने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, हालांकि वहाँ और कोई रास्ता नहीं, क्योंकि सभी कॉलेजों में कक्षाएं शुरू हुए एक महीना हो गया था। मैं मन में डर गई थी, ना ही मुझे समझ आ रहा था कि आगे क्या करूं। मैंने यहाँ तक सोचा कि मेरी जिंदगी खत्म हो गई। इस हालत में, जब मैं प्रार्थना कर रही थी, परमेश्वर ने मुझे मेरे भविष्य के अध्ययन के संबंध में एक दर्शन दिया, कि मैं शिक्षा के लिए विदेश जा रही हूँ। जिसका पूरा होना सचमुच नामुमकिन सा लग रहा था। लेकिन एक महीने के भीतर परमेश्वर ने जो प्रगट किया उसे पूरा किया। मुझे



विदेश (किर्गिस्तान-रूस) में पढ़ने का मौका मिला। मैं वहाँ मेडिकल की पढ़ाई करने गयी थी। एक दिन जब मैं किर्गिस्तान से एक साल पढ़ाई करके घर लौटी तो मैं बहुत जोर से रो रही थी और उदास थी। कई सवाल मेरे मन में उठ रहे थे, जैसे "मेरा जीवन ऐसा क्यों हो गया है" और "क्यों मुझे मैरिट सीट नहीं मिली?", और पढ़ाई के पहले वर्ष के

दौरान जिन संघर्षों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, वे मुझे बहुत परेशान कर रहे थे और मैं बहुत नीचा महसूस कर रहा थी।

ठीक है... आप थकावट की स्थिति में थे....क्या उस समय यीशु आपसे मिले थे?

मैंने "जेबिकालम वंगा" कार्यक्रम देखा जो लॉकडाउन के दिनों में शुरू किया गया था। ऐसे ही एक कार्यक्रम में ऐसा कहा गया था, 'जब प्रभु का आत्मा आएगा तो हम नई शक्ति प्राप्त करेंगे और पवित्र आत्मा हमें हमारी कमजोरियों में मजबूत करेगा।' ये शब्द मेरे दिमाग में जैसे उछल पड़े।

फिर मैं प्रार्थना करने लगी। प्रार्थना के दौरान मैंने महसूस किया कि परमेश्वर की आत्मा मुझे भर रही है। तब मोहन अंकल कह रहे थे, "प्रार्थना बंद मत करो, एकांत में नित्य प्रार्थना करो, परमेश्वर तुम्हें एक नई भाषा देगा"। उसी तरह मैं प्रार्थना करने लगी। कुछ ही मिनटों में पवित्र आत्मा ने मेरे सहने से ज्यादा मुझे भर दिया। मैंने अपने दिल में शांति और खुशी महसूस की। मेरे भीतर एक नई

ऊर्जा और उत्साह आया। एक साल पहले जिस जगह मैं यह सोचकर रो रहा थी कि मेरा जीवन व्यर्थ है, वहीं यीशु ने मेरी जिंदगी बदल दी। उसी रात परमेश्वर ने मुझसे यह कहते हुए बात की, "तेरे शोक के दिन पूरे हुए, और मैं तेरे घर में शान्ति की आज्ञा दूंगा।" उसके बाद,



मेरा जीवन पूरी तरह से बदल गया। मुझे नई आशा और शक्ति मिली।

प्रभावशाली...!! यीशु आपसे मिले...तब से आपके जीवन में क्या बदलाव आए?

बाद में, मोहन अंकल ने युवाओं के लिए 'इग्रिटर्स कैंप' की घोषणा की। मैंने इसमें भाग लिया और पहले दिन परमेश्वर ने मेरे साथ हस्तक्षेप किया। तभी मुझे समझ में आया कि परमेश्वर ने मुझे पढ़ाई के लिए विदेश क्यों भेजा है। कैंप में भाग लेने के बाद मुझे कई बदलाव देखने को मिले। जो सांसारिक वस्तुएँ मुझमें दिखाई देती थीं, वे फीकी पड़ गईं। परमेश्वर ने मेरे जीवन में बहुत से परिवर्तन लाए हैं और मुझमें प्रार्थना की आत्मा उड़ेल दी है। अब हम एक छोटे समूह रूप में के भारत राष्ट्र के साथ-साथ किर्गिस्तान के लिए भी प्रार्थना कर रहे हैं। मैं बचपन में अपने माता-पिता और अपनी बहन के साथ बहुत समय बिताती थी। इस वजह से मुझे लगता है कि मेरे लिए पारिवारिक प्रेम सबसे अहम चीज है। लेकिन जिस दिन मैंने क्रूस के प्रेम को जाना, मुझे एहसास हुआ कि न तो मेरे दोस्त और न ही मेरे साथी मेरे दिल में उस जगह को भर सकते हैं। मैं समझ गई कि प्रभु यीशु ही हैं, जो बिना किसी अपेक्षा के अनंत प्रेम प्रदान करते हैं। परमेश्वर मुझे अपने वचन की घोषणा करने और कहीं भी लोगों को सुसमाचार साझा करने के लिए उपयोग कर रहा है।

जब मैं तीसरे कर्फ्यू के बाद विदेश में अध्ययन करने आई, तो प्रभु ने मुझे बहुतों को अपने वचन सुनाने के लिए कहा। कई युवाओं को सुसमाचार सुनाने की कृपा वह प्रदान कर रहा है। उसने मुझे सिखाया कि मुझे कैसे सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए। जब मैं विदेश में पढ़ रही थी, तो एक दिन भी मुझे अपने परिवार के बारे में सोचकर घर दुख महसूस नहीं हुआ, क्योंकि यीशु मेरे समर्थक थे। जब मैं नीचे होती तो वह मुझे अपने शब्दों से दिलासा देते थे। रूस में लोग रूसी और किर्गिज़ में बोलते हैं, पर मैं उन भाषाओं को स्पष्ट रूप से बोलना नहीं



जानता थी। लेकिन यीशु मुझे हर शब्द सिखाते और मुझे बोलने के लिए कहते। मैं जहां भी जाती हूँ वे हमेशा मेरा साथ देते और मेरा मार्गदर्शन करते। उसने मुझे सांसारिक मित्तों से संबंध नहीं रखने दिया और मुझे अच्छे मित्र दिए। उन्होंने मुझे कठिन विषयों का अध्ययन करने की बुद्धि दी। मैंने कभी अकेले रहने

की चिंता नहीं की। मैं महसूस कर सकती थी कि परमेश्वर हर दिन एक पिता, मां और एक दोस्त की तरह मेरा मार्गदर्शन कर रहे हैं। वे मुझे ढुंढते हुए आये जो बेकार था, उसने मेरा अभिषेक किया और मुझे उन जगहों पर सुसमाचार सुनाने के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं जहाँ इसका प्रचार नहीं किया जा सकता है।

आश्चर्यजनक...!! आप जिस स्थान पर अध्ययन कर रहे हैं, वहां आप उत्साह से प्रभु की सेवा कर रहे हैं। इसे पढ़ रहे युवाओं से आप क्या कहना चाहेंगे?

वही यीशु जिसने मुझे बदल दिया, वह निश्चय आपके जीवन की आदतों को बदल देंगे। वह तुम्हें शांति और खुशी देंगे और कई लोगों के लिए आपको इस्तेमाल करेंगे। परन्तु तुम्हें प्रभु के लिये जोश से उठना और उसका काम करना होगा। युवाओं के रूप में परमेश्वर हमसे यही उम्मीद करते हैं। जागृति के इन दिनों के दौरान अपना उपलब्ध समय बर्बाद न करें, इसके बजाय आत्माओं को जीतें। प्रभु आपको भी ऊंचा करेंगे।

प्रिय युवाओं! हो सकता है कि आज आप यह सोचकर मन में डर गए हो कि मुझे वह कोर्स नहीं मिला जो मुझे चाहिए था। प्रभु ने प्रिय बहन जेफ़लिन स्टेन को उसकी वफादार प्रार्थना के माध्यम से उसकी इच्छा को पूरा किया है और उसे आज उसके वांछित पाठ्यक्रम का अध्ययन करने की कृपा प्रदान कर रहा है। आप भी निःस्वार्थ भाव से प्रार्थना करें! वह आपकी इच्छा के अनुसार आपके साथ करेंगे और आपको ऊंचा करेंगे!



योएल की पुस्तक (यहोवा के दिन का आगमन)

प्रिय युवाओं! इस महीने हम छोटी भविष्यवाणी की किताबों में से एक, "योएल की किताब" से कुछ दिलचस्प बातों पर संक्षेप में चर्चा करेंगे। योएल का अर्थ है यहोवा परमेश्वर है।

परिचय:

योएल अकाल की घटनाओं और यहूदा में आने वाली टिड्डियों के हमले पर प्रकाश डालता है, ताकि यहोवा के दिन पर इस्राएल के भविष्य के आक्रमण के बारे में चेतावनी दी जा सके। बहुत ही कम समय में टिड्डियों ने कुछ ही घंटों में सभी पौधों को खा लिया।

योएल कहते हैं, "यदि राष्ट्र पश्चाताप करे और परमेश्वर के पास लौट आए, तो परमेश्वर उनके साथ अपने संबंध को नया करेगा और उन्हें आशीष देगा"।

लेखक: योएल

समयरेखा: 835 ई.पू

अध्याय: 3

आयत: 73

शब्द: 2034

मुख्य व्यक्ति: योएल

योएल की पुस्तक का सारांश

(i) इतिहास में प्रभु का दिन

- इतिहास में टिड्डियों द्वारा विनाश (योएल 1:1-12)
- इतिहास में सूखा (योएल 1:13-20)

(ii) भविष्यवाणी में प्रभु का दिन

- यहूदा की बंधुआई की भविष्यवाणी (योएल 2:1-11)
- यहूदा के उद्धार के लिए आवश्यकताएं (योएल 2:12-27)
- प्रभु के आने के पूर्व दिनों की घटनाएँ (योएल 2:28-32)
- यहोवा के दिन में होने वाली बातें (योएल 3:1-21)

योएल में मसीह को इस रूप में दर्शाया गया है,

- वह जो पवित्र आत्मा को उँडेलता है। (यहून्ना 2:28; यहून्ना 16:7-5)
- राष्ट्र का न्याय करता है (योएल 3:2-12) और
- वह जो इस्राएल को शरण देनेवाला है (योएल 3:16)



अलग सोचें

मुझे विश्वास था कि मैं अपनी 12वीं कक्षा में सभी विषयों में 95% अंक प्राप्त कर लूंगा। मैंने बहुत अच्छा अध्ययन किया और अपनी परीक्षाएँ लिखीं। हालांकि मेरे पिता बीमार थे और हमें आर्थिक परेशानी थी, मैंने अपनी पढ़ाई में कड़ी मेहनत की। लेकिन जब नतीजे आए तो मैं चौंक गयी। मैंने केवल 85% अंक प्राप्त किए। मुझे चिंता थी कि मैं डॉक्टर बनने के अपने सपने को पूरा नहीं कर सकती। लेकिन मेरे दोस्तों ने मुझे बताया कि चिकित्सा के क्षेत्र में और भी बहुत से कोर्स हैं। चूंकि मैं एमबीबीएस नहीं कर सकी, इसलिए मेरा मन किसी और कोर्स को करने का नहीं था। डॉक्टर बनकर गरीब लोगों की सेवा करने की मेरी महत्वाकांक्षा थी। लेकिन सब कुछ टूटे हुए सपने जैसा निकला। मेरे माता-पिता के साथ मेरी असहमति थी, मैंने किसी अन्य कॉलेज में आवेदन नहीं किया था और हमने पूरी तरह से अपने घर की शांति खो दी। चूंकि मैंने कम अंक प्राप्त किए, इसलिए मेरे माता-पिता मुझे फटकार लगा रहे थे कि मैंने अच्छी पढ़ाई नहीं की और उन्हें धोखा दिया। वो दर्द ऐसा था जो एक तरफ तो जो मुझे, मेरे सपने को पूरा करने नहीं दे रहा था और दूसरी तरफ मेरे माता पिता का गुस्सा और चिड़चिड़ापन जो मुझे दिन प्रति दिन निराशा में धकेल रहा था। मुझे नहीं पता कि क्या करना है

— जेनी, थेनी।

मेरी प्यारी बहन जेनी! अपने सपने को पूरा करने की आपकी इच्छा और आपकी निराशा समझ से बाहर है। इसके अलावा, आपके माता-पिता के निर्दयी शब्द आपकी पीड़ा को बढ़ा रहे हैं। जेनी! आपका डॉक्टर बनने का सपना वाकई बहुत अच्छा है। मैं इसकी सराहना करता हूँ। यह प्रशंसनीय है कि आज की दुनिया में दवा एक व्यवसाय बन जाने के बावजूद आप गरीबों की सेवा करने के उद्देश्य से चिकित्सा करना चाहते थे। आपको डॉक्टर न बनने की चिंता हो सकती है। पर, जैसा आपके दोस्तों ने कहा कि केवल एमबीबीएस ही चिकित्सा का कोर्स नहीं है। और भी बहुत सारे कोर्स हैं। यह सच है कि चिकित्सा के क्षेत्र में गरीबों की सेवा करने के अपार अवसर हैं। तो बिना किसी परेशानी के अधिक जानने के लिए अन्य पाठ्यक्रमों की खोज करें।

चिकित्सा में बहुत सारे पाठ्यक्रम हैं जिनमें नीट की आवश्यकता नहीं होती है। अपने सपने को प्राप्त करने के लिए अब तक जो प्रयास किया है, वही प्रयास करें। प्रयास करें तो कुछ भी असंभव नहीं।

जेनी! आइए हम चिकित्सा क्षेत्र में प्राप्त होने वाले लाभों की जाँच करें, यदि आप डॉक्टर नहीं बन सकते।

- आपका पुराना सपना सच हो जाएगा।
- जैसा तुमने चाहा है, वैसे ही गरीबों की सेवा कर सकती हो।
- जब आप अपनी पढ़ाई जारी रखोगी तो, आपके माता-पिता की फिर से खुश होने की संभावना है।
- पढ़ाई से आपके घर में चल रहे झगड़ों को शांति में बदला जा सकता है।
- आप अपने तनाव और चिंताओं को दूर कर सकते हैं और नई ऊर्जा के साथ घूम सकते हैं।
- एमबीबीएस के अलावा मेडिकल क्षेत्र में कई कोर्स हैं। संभावना है कि आप इनमें से किसी भी क्षेत्र में हासिल करने वाली पहली महिला हो सकती हैं यदि आप उन्हें कुशलता से सीखते हैं।
- भविष्य में आप अपना खुद का अस्पताल बना सकती हैं और कई डॉक्टरों को काम पर रख सकती हैं। हम इस तरह के कई लाभों को सूचीबद्ध कर सकते हैं।



अगर आप घर पर उदास बैठे हैं और अपनी पढ़ाई को आगे बढ़ाने में विफल हैं तो,

- आपके घर में अशांति और संघर्ष वृद्धि होगी।
- आपका तनाव बढ़ सकता है जिससे मानसिक बीमारी हो सकती है।
- इस बात की भी संभावना है कि आपके हठ से आपके पिता की सेहत पर और असर पड़ेगा।
- जब आपके दोस्त दूसरे कोर्स करते हैं और ऊंचाइयों तक पहुंचते हैं, तो आप शायद दुखी महसूस करेंगी कि आपने ऐसा नहीं किया।
- आपके अवसाद के कारण आप गलत निर्णय ले सकते हैं।



एक परमेश्वर है जो यीशु कहलाते हैं, जो उन सभी युवाओं की मदद और मार्गदर्शन करने के लिए हैं, जो चौराहे पर खड़े हैं और आप की तरह संघर्ष कर रहे हैं। वह आपको आपकी निराशा से बाहर निकालेगा, आपको आशा देगा और आपको आपका लक्ष्य हासिल करने में मदद करेगा।

यीशु निश्चित रूप से आपकी मदद करेंगे और आपको सफलता का शिखर देंगे !!



मीडिया के क्षेत्र में जागृति

पिछले दशक में मीडिया उद्योग में जबरदस्त विकास हुआ है। 138 करोड़ भारतीय आबादी में से 89 प्रतिशत से अधिक घरों में दूर संचार सेवा पहुंची है। 70 करोड़ से अधिक लोगों की इंटरनेट तक पहुंच है। 50 करोड़ से ज्यादा लोग स्मार्ट फोन का इस्तेमाल करने लगे हैं। यद्यपि शैतान ने इस मीडिया का उपयोग करके लाखों लोगों को गुलाम बना लिया है, हमारे प्रभु इस अंतिम समय के पुनरुत्थान में इसके माध्यम से पूरे देश में पुनरुत्थान ला रहे हैं। विशेष रूप से लॉकडाउन के दिनों में, जब पूरी दुनिया स्तब्ध थी, फेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसी सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग करने वालों की संख्या तेजी से बढ़ी। ऐसे में मीडिया ने थके-हारे लाखों लोगों के जीवन को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई। लाखों लोग जो परमेश्वर से भटक गए थे, उनकी ओर फिरे। हम न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में प्रभु के वचन के प्रसार में मीडिया क्षेत्र की सराहनीय भूमिका देख रहे हैं।

मेरे प्यारे नौजवानों...! स्वर्ग का राज्य निकट है (मत्ती 4:17)। प्रभु यीशु शीघ्र ही इस पृथ्वी का न्याय करने आएंगे। उनके आने के बाद, दुनिया भर में एक महान पुनरुत्थान होगा। उल्लेखनीय है कि यह जागृति भारत में शुरू होगी। तो व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, फेसबुक, ट्विटर आदि का उपयोग करके अपना समय बर्बाद न करें। इसके बजाय, अपने स्मार्टफोन का उपयोग हज़ारों लोगों तक परमेश्वर के वचन और सुसमाचार को साझा करने के लिए करें और असंख्य आत्माओं को मसीह की ओर मोड़कर पुनरुत्थान में भागीदार बनें।

जुड़े रहें!

सबसे बड़ी चुनौती जिसका सामना आज का युवा कर रहा है वह है अकेलेपन पर काबू पाना। जीवन के किसी न किसी मोड़ पर हर किसी को इसका सामना करना पड़ता है। कोई भी व्यक्ति बिना कारण के अकेलेपन का अनुभव नहीं करता है। या तो हम खुद को दूसरों से अलग कर देंगे या दूसरों द्वारा हमें खारिज कर दिया जाएगा। यह जानकर बहुत हैरानी होती है कि कई युवा स्मार्टफोन और सोशल मीडिया जैसे फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, ट्विटर आदि में लगे रहने के बाद भी इस अकेलेपन से बाहर नहीं आ पाते हैं। जंगल में स्वतंत्र रूप से विकसित हुए जानवर, पिंजरे में विकसित हुए जानवरों की तुलना में स्वस्थ और चतुर होते हैं। हालांकि पिंजरे में विकसित जानवरों को स्वस्थ भोजन और प्राकृतिक वातावरण प्रदान किया जाता है, फिर भी वे अकेलापन महसूस करते हैं। इसी तरह, हालांकि एक व्यक्ति को वह सब कुछ मिलता है जो वह चाहता है और एक स्वस्थ वातावरण में रहता है, फिर भी वह पिंजरे में जानवर की तरह अकेला महसूस करता है।



ज्यादातर अपराध तब होते हैं जब लोग अकेले होते हैं। राजा दाऊद, जो परमेश्वर के मन के अनुसार था, पाप में गिर गया क्योंकि वह युद्ध के समय युद्ध में नहीं गया था और अकेला रह गया था। आज भी, कई युवा गुप्त पापों और सोशल मीडिया में पड़ जाते हैं, जब वे अकेले होते हैं, शायद अगर दाऊद अकेले रहने के बजाय अपने दल के साथ युद्ध करने गया होता, तो वह पाप करने से बच सकता था। शैतान हमारे अकेलेपन का फायदा उठाता है और हमें पाप में डाल देता है। इसलिए अकेले रहने से बचना ही बेहतर है। इसलिए किसी भी कारण से अकेले न रहें। जब आप एकांत में पाप करने के लिए ललचाते हैं, तो उस स्थान को छोड़ देना या भाग जाना बेहतर है।

बहुत से दोस्तों से घिरे होने के बावजूद कुछ लोग अकेलापन महसूस करते हैं। वे यह सोचकर खुद को अलग कर लेते हैं कि हर कोई उनसे नफरत करता है और कोई उनसे प्यार नहीं करता। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपके आसपास कितने दोस्त हैं, लेकिन वे किस तरह के हैं, सबसे ज्यादा मायने रखते हैं। दानियेल जो बाबुल की पापी भूमि में रहता था, एक सफल जीवन जीने में सक्षम था क्योंकि उसके अच्छे दोस्त थे जो आत्मिक और प्रार्थना पूर्ण थे। जब आप अच्छे दोस्तों को ध्यान से चुनते हैं और उनके साथ समय बिताते हैं, तो आप अकेलेपन को वश में कर सकते हैं। कुछ लोग खुश होते हैं जब दोस्त आसपास होते हैं, उन्हें अकेलापन महसूस नहीं होता है, लेकिन जब उनके दोस्त उन्हें छोड़ देते हैं, तो वे अकेलापन महसूस करने लगते हैं। दोस्त हर वक्त हमारे साथ नहीं रहते। लेकिन हमारा एक दोस्त है जो हमें कभी नहीं छोड़ता। वह यीशु मसीह है। कभी-कभी हमारे सबसे अच्छे दोस्त भी हमें छोड़ सकते हैं। परन्तु यीशु हमें कभी न छोड़ेगा और न कभी त्यागेगा।



इसाएल के लोगों ने मूसा की अगुवाई में मिस्र से कनान की ओर अपनी यात्रा शुरू की। तब परमेश्वर ने यहोशू को यह बड़ी जिम्मेदारी दी। उसने कहा, "मूसा मेरा दास मर गया है.. अब वहां से उठ, इस यरदन के पार, तू और यह सब लोग जाए, उस देश में जिसे मैं इस्राएलियों को देता हूँ।" (यहोशू 1:2)। हालांकि यहोशू के पास मूसा के साथ लोगों की अगुवाई करने का अनुभव था, फिर भी एक तरफ उसने मूसा के न होने का अकेलापन और दूसरी तरफ एक अकेले व्यक्ति के रूप में इन लोगों की अगुवाई करने के डर को महसूस किया होगा। इसलिए परमेश्वर यहोशू से कहता है, "यहोशू तुम अकेले नहीं हो... जैसे मैं मूसा के साथ था, वैसे ही मैं तुम्हारे साथ रहूँगा;

मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगा और न ही त्यागूंगा" (यहोशू 1:5)। इसके बाद यहोशू लोगों को इस दृष्टिकोण के साथ अगुवाई करना शुरू कर देता है कि 'मैं अकेला नहीं हूँ लेकिन यहोवा मेरे साथ है। ऐसा इसलिए था क्योंकि यहोवा यहोशू के साथ खड़ा था, इसलिए वह अपने सभी युद्धों में विजयी होने में सक्षम था।



परमेश्वर हमेशा हमारे साथ रहना चाहता है। लेकिन आज के सोशल मीडिया और सांसारिक दोस्ती के साथ, हम यीशु के साथ नहीं रह पा रहे हैं और एक ऐसी स्थिति में धकेल दिए गए हैं जहाँ हमें उससे दूर रहना है और अकेले रहना है। अपने बारे में सोचें, क्या आप एक दिन के लिए ज्यादा से ज्यादा अपने सेल फोन के साथ हैं या यीशु के साथ हैं।

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, दोस्तों और सोशल मीडिया से घिरे होने के बावजूद आपको भी अकेलापन महसूस हो सकता है। या, जब आप अकेले होते हैं, तो आप एक निश्चित पाप से बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रहे होते हैं, जिसे आप वर्षों तक दूर नहीं कर सकते। कोई बात नहीं, आप अकेले नहीं हैं! परमेश्वर कहता है, "डरो मत, निराश मत हो, क्योंकि जहाँ कहीं तुम जाओगे वहाँ तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग रहेगा" (यहोशू 1:9)। यह न भूलें। जब आप मसीह के साथ एक हो जाते हैं, तो आप अपने रास्ते में आने वाली किसी भी स्थिति पर आसानी से विजय प्राप्त कर सकते हैं।

अकेलापन

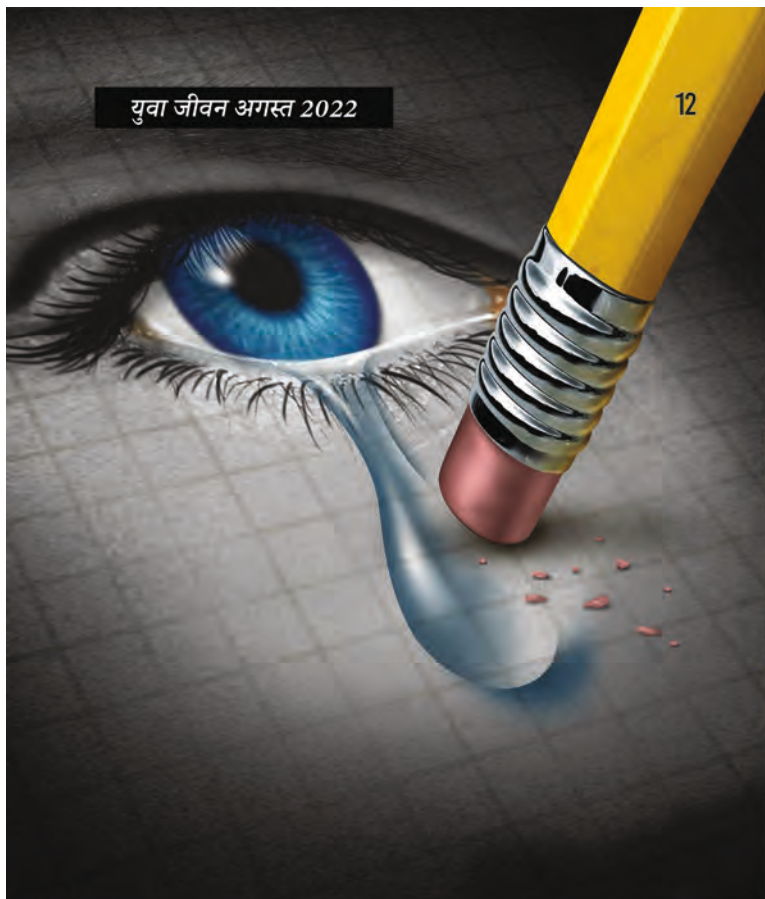
मेरे प्यारे युवा दिलवालों!

आइए हम इस महीने के लेख में प्रार्थना करते हैं कि, हमारे प्रभु यीशु आपके आत्मिक जीवन में आप सभी की अगुवाई करते हैं। इस महीने का विषय "अकेलापन" है। क्या आपने कभी अकेलेपन का अनुभव किया है? हम में से लगभग सभी अपने जीवन में कभी न कभी अकेले रहे होंगे, अकेलेपन का मतलब केवल परिवार और दोस्तों के बिना अकेले रहना नहीं है। हालाँकि हम इन लोगों से घिरे हुए हैं, फिर भी हम अकेलापन महसूस करते हैं। अकेलापन बहुत खतरनाक होता है। इसीलिए, हमारे परमेश्वर ने उत्पत्ति में कहा, "मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं है"। हाँ दोस्तों! हम अकेले रहने के लिए नहीं बने हैं। केवल इसके बारे में सोचें! यह कितना भयानक होगा यदि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाए जहाँ आप पृथ्वी पर केवल आप ही हों। आशा है कि आप सभी को याद होगा कि कोरोना काल में जब कर्फ्यू लगा था, उन दिनों में अपने स्कूल और कॉलेज के दोस्तों को न देख पाने के कारण हमें कितना कष्ट हुआ।

हालाँकि हमारे कई रिश्तेदार और दोस्त हैं, लेकिन कोई भी हर समय हमारे साथ नहीं रह सकता। यह सांसारिक जीवन स्थायी नहीं है। एक समय आता है जब हम सब एक दूसरे को छोड़ देते हैं। लेकिन दोस्तों, आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है, हमारे पास अच्छा परमेश्वर यीशु है जिसने मृत्यु पर विजय प्राप्त की और हमें कभी नहीं छोड़ेगा। उसने वादा किया है, "... मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगा, न ही कभी त्यागूंगा.."। इब्रानियों 13:5

हाँ, कभी-कभी हम इंसानों द्वारा अलग-थलग पड़ जाते हैं, भले ही हमने कुछ भी गलत न किया हो। वचन में हम पढ़ते हैं, कि वे लोग जो राजा दाऊद के मित्र थे, उसके विरुद्ध हो गए, और उसे मार डालने को बेताब थे। बाइबल कहती है, उस स्थिति में दाऊद ने स्वयं को प्रभु में टकड़ा दिया। हमारे प्रभु यीशु मसीह को देखें, उन्हें अकेले ही सूली पर मरना था, हालाँकि उन्होंने केवल अपना प्रेम दिखाया और सभी का भला किया। मृत्यु के कगार पर, उसकी आवाज कितनी दयनीय थी, परमेश्वर को पुकार रही थी, "मेरे परमेश्वर! मेरे परमेश्वर! आपने मुझे क्यों त्याग दिया?" हालाँकि दोस्तों, यदि वह अकेले मरते हैं तो ही हम अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करेंगे। केवल अगर परमेश्वर पिता हमारे पापों को यीशु पर डालते हैं, तो हमारे लिए उनके साथ जुड़ने का द्वार खुल जाएगा। मेरे प्यारे नौजवानों, क्या आप अकेलापन महसूस कर रहे हैं? यीशु आपको बुलाता है, आपसे प्रेम करता है और वह हमेशा आपके साथ है। जिसने मत्ती 11:28 में कहा, "हे सब थके हुए और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ", वह तुम्हें भी अपनी ओर बुलाता है। क्या आप आएंगे? क्या आप आकर उसके प्रेम का स्वाद चखेंगे और अपना अकेलापन भूल जाएंगे? प्रभु यीशु हमेशा आपके साथ है!





तुम मेरे भटक जाने की गिनती करता है; मेरे आँसुओं को अपनी कुप्पी में रख लेता है: क्या उनकी चर्चा तेरी पुस्तक में नहीं है? (भजन 56:8)। दाऊद एक साधारण व्यक्ति था, एक महान राष्ट्र का राजा बनने के लिए उंचा किया गया। लेकिन राजा होने के बावजूद परमेश्वर के प्रति उनका प्रेम और विश्वास कभी कम नहीं हुआ। दाऊद आँसुओं से भरे जीवन के पथ से गुजरा। अक्सर वह रोता था जब तक कि उसके पास रोने की ताकत नहीं बची। वह जानता था कि उसके आँसुओं को कभी अन्देखा नहीं किया जाएगा। वह जानता था कि परमेश्वर उसके द्वारा बहाए गए हर आँसू से अवगत थे और उन्हें एक कुप्पी में एकत्र कर लिया है। इस कारण दाऊद कहता है, कि यहोवा मेरे भटक जाने को गिनता है, और मेरे आँसू अपनी कुप्पी में रखता है। वह कहता है, "क्या उनकी चर्चा तेरी पुस्तक में नहीं है?" आज की दुनिया में ऐसे कम ही लोग मिलते हैं जो आँसू नहीं बहाते। हर इंसान के जीवन में जब किसी बात का दुःख, आत्मा पर जुलम करता है तो वो गम आँसू बनकर निकल आते हैं।

तुम्हारे आँसुओं का

जवाब देने वाले परमेश्वर

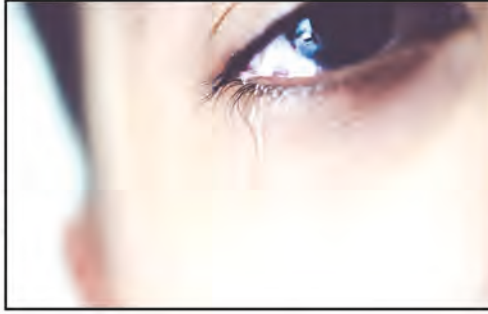
एक बार जब मैं मदुरै में था तो एक युवक मेरे पास अकेले में बात करने आया। जब उन्हें अकेले बुलाया गया तो उनकी आँखों से आँसू छलक पड़े। कॉलेज का युवा छाल आँसू बहा रहा था, और मैंने उससे उसके आँसुओं का कारण पूछा। उन्होंने कहा, "मैं पढ़ाई नहीं कर पा रहा हूँ। मैं अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पा रहा। मैंने उससे पूछा, "क्यों?" और उसने कहा, "मेरे पिताजी को मेरी माँ के व्यवहार पर शक है और वह लगातार कठोर शब्दों से उन्हें फटकार लगाते हैं। मेरी माँ हमेशा रोती रहती है। जब मैं अपनी किताबें खोलता हूँ, तो मैं केवल अपनी माँ का चेहरा आँसू से भरा हुआ देखता हूँ। मैं अध्ययन करने में असमर्थ हूँ। क्या आप

प्रार्थना कर सकते हैं कि मेरे पिताजी बदल जाएँ?" युवक ने पूछा।



आज ऐसे लोग कम ही मिलते हैं जिनके आँसू नहीं आ रहे हों, चाहे वे बच्चे हों, किशोर हों, परिवार के सदस्य हों या बुजुर्ग हों। क्या आप भी उनमें

से एक हैं जो रात में अपने तकिए को आँसुओं से भिगोते हैं, यह सोच कर कि कोई आपको नहीं देखेगा? परमेश्वर की नजर आप पर है। परमेश्वर आपके आँसुओं को अपनी कुप्पी में एकल करता है और उन्हें अपनी पुस्तक में सूचीबद्ध करता है। परमेश्वर की आँखों के सामने आपके आँसू अनमोल हैं।



बाइबल कहती है कि प्रभु हमारे आँसुओं का हिसाब रखता है, कि इस बेटे/बेटी ने आज इस कारण से इतने आँसू बहाए हैं। क्या यहोवा तेरे आँसू नहीं बटोरता और उनका हिसाब नहीं रखता है?

राजा दाऊद कहता है, “हे प्रभु, क्या तू जानता है कि मैं तड़प-तड़प कर कितना रो रहा हूँ?” जब हम आँसू बहाते हैं, तो प्रभु चुप या स्थिर नहीं रहते। वह एक दयालु परमेश्वर हैं जो अपने बेटे या बेटी के रोने पर चमत्कार करना चाहते हैं। परमेश्वर जो आँसुओं को आनंद में बदल देते हैं, वे आपके आँसू पोंछने के लिए चमत्कार करेंगे।

बाइबल में ऐसी कई घटनाएँ लिखी गई हैं जिनसे पता चलता है कि कैसे परमेश्वर ने चमत्कार किए, आँसू पोंछे और लोगों के जीवन को बदल दिया। 1 शमूएल 1:10 हन्ना नाम की एक महिला के बारे में बताता है। वह यहोवा के साम्हने गई, और रोई, और घोर वेदना के साथ प्रार्थना की। वह क्यों रोई? उसकी कोई संतान नहीं थी, और इसने उसे दुखी किया। उसका पति उसे बहुत प्यार करता था। लेकिन वह अक्सर पीड़ा में रोती थी और कहती थी, “मुझे कभी बच्चे का आशीष क्यों नहीं मिली?” हालाँकि उसके पति के प्यार ने उसे दिलासा दिया, लेकिन लोगों ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा कि उसकी कोई संतान नहीं है। 1 शमूएल 1:6, 7 कहता है कि उसके प्रतिद्वंद्वियों ने उसे दुखी करने के लिए उसे गंभीर रूप से उकसाया



। इसलिए वह लगातार रोती और कुछ नहीं खाती थी। कई सालों से उसने अपना समय आँसुओं में और दुखों में बिताया और भोजन तक त्याग दिया।

एक दिन, उसने खुद से कहा, “मैं क्यों हमेशा रोऊँ और खाना न खाऊँ। मैं

यहोवा के पास जाऊँगी, और वह मुझे एक बच्चा देगा। केवल वो ही मेरे अपमान को बदल सकता है। वह उठी, चर्च गई और घंटों बिताए, प्रभु के चरणों में आँसू बहाए। यहोवा ने हन्ना को फिर से याद किया (1 शमूएल 1:19)। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर ने उसके आँसुओं को देखा और वह तुरंत शांत हो गया। उसने उसे शमूएल नाम का एक पुत्र दिया।

उसके बाद, परमेश्वर ने उसे छह बच्चों, तीन बेटों और दो बेटियों के साथ आशीषतकिया। हन्ना को उसी स्थान पर ऊँचा किया गया जहाँ उसे अपमानित, लज्जित और ताड़ना दी गई थी। अपने पति, दोस्तों या रिश्तेदारों के सामने आँसू बहाने से कोई फायदा नहीं है। वे उस समय शब्दों से आपको दिलासा देने के अलावा कोई चमत्कार नहीं कर सकते। लेकिन परमेश्वर उन आँसुओं को समझता है जो आप उसकी उपस्थिति में बहाते हैं और तुरंत चमत्कार करते हैं।

प्यारे जवानों, क्या आप भी आज अपनी पढ़ाई या भविष्य के बारे में सोचकर आँसू बहा रहे हैं? तेरे आँसुओं का उत्तर देने वाला यहोवा तेरे संग है। जिस परमेश्वर ने हन्ना की निन्दा को बदला और उसे स्मरण किया, वह तुम्हें भी स्मरण रखेगा। रोओ और प्रभु के चरणों में प्रार्थना करो। विश्वास के साथ प्रार्थना करें कि यीशु आपके आँसुओं को बदल सकते हैं। वह तुम्हारे आँसुओं को खुशी में बदल देगा। आमीन!!

कुछ भी हासिल किया जा सकता है

युवा विजेताओं को प्यार भरा अभिनंदन! यदि हम रास्ते में आने वाली हर विफलता, बाधा और अपमान को एक विशाल पर्वत के रूप में ध्यान देते रहेगें, तो हम इस विशाल पर्वत के पीछे अपने सफल जीवन को कभी नहीं देख पाएंगे। हमें वह नहीं बनना चाहिए, जो इस पहाड़ से डरते हैं, बल्कि वह बने जो सफलता पाते हैं और उस पर अपना पैर रख कर अपनी छाप छोड़ते हैं। पेश है ऐसी पहचान बनाने वाले विजेता की जिंदगी।



हम इंसानों के अलग-अलग सपने होते हैं। इसी तरह युवा पूजा अग्रवाल ने 27 साल की उम्र में खुशी-खुशी एक कॉलेज प्रोफेसर के रूप में जीवन व्यतीत करने के अपने जीवन के बारे में कई सपने देखे थे। ऐसी परिस्थिति में पूजा के जीवन में एक भयानक घटना घटी।

पूजा और उनके पति, दिसंबर 2012 में नई दिल्ली रेलवे स्टेशन गए थे।

पूजा के पति शहर से बाहर जा रहे थे,

दोनों रेलवे स्टेशन गए। पूजा और उसका पति भीड़-भाड़ वाले रेलवे स्टेशन पर तेजी से चल रहे थे। भीड़ में फंसी

पूजा अचानक प्लेटफॉर्म से पटरी पर गिर गई। एक तेज गति से आ रही ट्रेन पूजा के ऊपर से निकल गई। पूजा दुर्घटना में बच गई, लेकिन उसके हाथ और पैर के तीन जोड़ काट दिए गए। वह केवल अपना दाहिना हाथ सक्रिय कर सकती थी।



अचानक हुए हादसे से पूजा की जान पर बन आई। वह भ्रमित थी और अपने भविष्य को लेकर अनभिज्ञ थी। पूजा ने खुद को सांत्वना दी और जीवन की

वास्तविकता को एहसास किया। उसने अपने खोए हाथ-पैर पर रोने के बजाय जीवन का सामना करने के लिए खुद को तैयार किया। पूजा का विचार था कि किसी तरह नौकरी ढूंढकर अपने

दम पर कमाया जाए। इसलिए उसने सरकारी परीक्षाओं की तैयारी शुरू कर दी। उसने कभी हार न मानने वाले रवैये के साथ अपनी तैयारी शुरू की। दृढ़ता के परिणाम स्वरूप, उन्हें 2014 में बैंक ऑफ इलाहाबाद (इंडियन बैंक) में नियुक्त किया

गया।

भीषण हादसे से उबरने के बाद पूजा ने धीरे-धीरे अपने जीवन में खुशियां हासिल करना शुरू कर दिया। पूजा की दोस्त ने उसे खेल पर ध्यान देने की सलाह दी। पूजा अपनी असमर्थता बताते हुए हंस पड़ी। बाद में एक दिन वह अपने दोस्त की सलाह पर इंडियन स्पाइनल इंजरी सेंटर गई। जब पूजा ने देखा कि वहां के लोग

व्हीलचेयर में बहुत खुशी से बास्केटबॉल खेल रहे हैं,

पूजा को टेबल टेनिस खेलने में दिलचस्पी हो गई और उन्होंने टेबल टेनिस सीखना शुरू कर दिया। पूजा एक शिविर में भाग लेने के बाद शूटिंग से जुड़ी हुई थी, जिसने पैरा एथलीटों को शूटिंग की शुरुआत की। इसलिए उसने शूट करना सीखना शुरू कर दिया। पूजा का सबसे दुखद जीवन बैंक की नौकरी, टेबल टेनिस और बंदूक की शूटिंग की व्यस्तता में बदल गया।

"व्हील चेयर पर होने के बावजूद, पैरा एथलीट अपने सपनों का पीछा करने लिए नहीं रुकी"।

एक दिन वह अचानक बैंक में काम करते हुए बेहोश हो गई। पूजा की जांच करने वाले डॉक्टरों ने उसे किसी एक खेल पर ध्यान देने की सलाह दी क्योंकि उसकी हालत बहुत

कमजोर थी। इसलिए पूजा ने शूटिंग का विकल्प चुना। पूजा, शूटिंग के अभ्यास के लिए हर दिन 40 किलोमीटर यात्रा करती थी। पूजा के पिता की मृत्यु उस समय हो गई जब वह राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता की तैयारी कर रही थी। उन्होंने सभी दुखों को सहते हुए 8 नवम्बर 2016 में गोल्ड मेडल जीता।

हालांकि, पूजा ने निशानेबाजी में कई पदक जीते, पर उनके पास कभी खुद



"व्हील चेयर पर होने के बावजूद, पैरा एथलीट अपने सपनों का पीछा करने लिए नहीं रुकी"।

की बंदूक नहीं थी। वो प्रतियोगिता के लिए उन बंदूकों को किराए पर लेती थी। बाद में पूजा ने बैंक से कर्ज लिया और अपनी बंदूकें खरीदीं। उसने बैंकाक प्रतियोगिता जीती, एशियाई खेलों के लिए उसका चयन हुआ, और क्रो एशिया विश्व कप में कांस्य पदक जीता। जून 2021 में पेरू में आयोजित विश्व कप में उन्होंने टीम वर्ग में दो रजत पदक जीते। आज वह एक महान विजेता के रूप में हैं।

अगर पूजा के जीवन में घटी उन घटनाओं में से कोई भी घटना हमारे सामने आती तो हम क्या करते? असफलता और कठिनाई के पहाड़ों को पार न कर पाने के कारण, क्या आप केवल कमियों के बारे में ही सोचकर विलाप और रोना चाहेंगे? या फिर पर्वत पर चढ़कर जयजयकार का झण्डा

फहराएंगे?

असफलताएं और अप्रत्याशित घातक घटनाएं हर इंसान के जीवन में आती हैं। अगर आप यह मानते हुए काम करने की हिम्मत करते हैं कि "मैं हासिल करने के लिए पैदा हुई हूँ" और किसी भी चीज से निपटने के लिए तैयार हूँ, तो सफलता निश्चित रूप से आपकी है!



आशीष जिसे याकूब ने एकांत में पाया!

यह जानते हुए कि एसाव क्रोधित है और याकूब से बदला लेना चाहता है, क्योंकि वह उसके द्वारा दो बार धोखा खा चुका था और उसकी आशीष को ले लिया, तो रिबका ने याकूब को एसाव के हाथ से छुड़ाने के लिए पढ़न-अराम में उसके मामा के घर भेजा। याकूब कम उम्र में अपने माता-पिता से अलग हो गया था, अकेले पढ़न आराम के लिए चला गया और एक अज्ञात भूमि में अकेला रह गया। कई वर्षों के बाद, वह अपने परिवार और संपत्ति के साथ अपनी जन्मभूमि लौटा। इस चिन्ता में कि उसका भाई अब भी उस पर क्रोधित रहेगा, याकूब ने एसाव के लिये बहुत से उपहार भेजे, जो उस से भेंट करने को आया था। रात में उसने अपने परिवार को याबोक की नदी पार करवाया और उन्हें सुरक्षित किनारे पर पहुँचा दिया। और याकूब इस ओर अकेला था। और ऐसा हुआ कि जब वह एसाव के डर से अकेला रह गया, और रात भर जागता रहा, और यह कहकर प्रार्थना करता रहा, कि जब तक तू मुझे आशीष न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूँगा। यहोवा ने उसकी दृढ़ प्रार्थना सुनी और याकूब को इस्राएल के रूप में आशीष दी। एसाव उसके पास आया, और उसे गले लगाया और चूमा। याकूब ने एकांत में यहोवा से युद्ध किया और उसकी आशीष प्राप्त की (उत्पत्ति 32, 33)।



मेरे प्यारे बच्चों, अकेलापन हमें कई अलग-अलग अनुभव सिखाता है। याकूब ने एकांत में, परमेश्वर के साथ संघर्ष किया, प्रार्थना की और एक महान आशीष प्राप्त किया जो कभी नहीं खोएगा। एकांत में प्रभु के साथ एक हो जाओ!



वह पाप जो दाऊद ने एकांत में किया!

एक शाम, महल के शीर्ष पर टहलते हुए, उसने नीचे एक सुंदर महिला को देखा। उसे देखने के बाद, दाऊद के मन में शांति नहीं थी। स्त्री के बारे में पूछने पर पता चला कि वह ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा थी। यह जानते हुए भी कि वह दूसरे पुरुष की पत्नी है, वह उसके पीछे वासना करता रहा। दाऊद ने, जो अकेला था, बतशेबा को अपने महल में बुलाया, एकांत समय में उसके साथ पाप किया। दाऊद ने पाप को छिपाने की कोशिश में, ऊरिय्याह को युद्ध में सबसे आगे रखवा दिया और ऊरिय्याह युद्ध में मारा गया। दाऊद ने बतशेबा से विवाह किया, जो यहोवा की दृष्टि में दुष्टता थी। जब यहोवा ने नातान

भविष्यद्वक्ता को भेजकर उसके पाप का समाचार उस को सुनाया, तब दाऊद टूट गया, और अपने पाप को मान लिया, कि उस ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। दाऊद की गलती से उसे और उसके परिवार को कई नुकसान हुए। दाऊद यहोवा को प्रसन्न करता था। परन्तु जब वह अकेला था, तो वह उस पाप पर जय पाने में असमर्थ था (1 शमूएल 11, 12)।

प्रिय युवाओं! जब आप अकेले हों तो आपका क्या होगा? क्या तुम वही करते हो जो यहोवा को भाता है? या क्या आप ऐसा पाप करने जा रहे हैं जो परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करे और दाऊद की तरह सब कुछ खो दें? अकेले रहने से बचें और परमेश्वर से जुड़े रहें!



निराशा जो हव्वा को एकांत में मिली

परमेश्वर ने आदम को अदन की वाटिका में काम करने और उसकी रक्षा करने के लिए रखा। एक दिन आदम फल लेने गया। यह जानते हुए कि हव्वा अकेली है, शैतान ने उसके अकेलेपन का फायदा उठाया। सर्प ने हव्वा से वर्जित पेड़ का फल खाने को कहा जिसके बारे में परमेश्वर ने कहा था कि तुम इसमें से नहीं खाना। उसने वर्जित पेड़ का फल खाने के लिए उसे यह कहते हुए धोखा दिया, कि तुम परमेश्वर की तरह बन सकते हो। उसने न केवल खाया, वरन आदम को भी खाने को दिया। तुरंत उनकी आंखें खुल गईं। शर्म और डर ने उन्हें जकड़ लिया। जब उन्होंने शाम को बगीचे में यहोवा के चलने की आवाज सुनी, तो वे दौड़े और छिप गए। आदम ने हव्वा को दोषी ठहराया। हव्वा

ने सर्प को दोषी ठहराया। उनके स्पष्टीकरण को स्वीकार न करते हुए, परमेश्वर ने उन्हें अदन की वाटिका

से बाहर भेज दिया। (उत्पत्ति 3)

प्रिय युवाओं!

हव्वा अकेली थी, शैतान ने चालाकी से हव्वा को बरगलाया और उसे अदन की वाटिका से बाहर भेज दिया। उसी तरह, जब आप अकेले होंगे, तो वह चालाकी से बात करेगा और आपको पाप में गिरा देगा और आप अपनी आशीषें खो दोगे। इसलिए हमेशा परमेश्वर से जुड़े रहें।

विजय जो दानिय्येल ने एकांत में प्राप्त की

दानिय्येल, एक युवक जो दूसरों की तुलना में अधिक कुशल था, उसे बाबेल की भूमि पर शासक बनाया गया था। और उस देश के लोग दानिय्येल से डाह करने लगे। उससे छुटकारा पाने के लिए, उन्होंने दारा राजा से एक कानून बनवाया, कि उसके अलावा किसी भी देवता की पूजा नहीं की जानी चाहिए, और जो इसका उल्लंघन करे उन्हें सिंह की गुफा में डाला जाए। राजा ने इस कानून को अमल में लाने के लिए हस्ताक्षर किए। जब दानिय्येल ने यह कानून सुना, तो उस ने पहिले के समान ही तीन बार प्रार्थना की। ईर्ष्या करने वालों ने यह बात राजा को बताई। चूंकि राजा ने कानून पर हस्ताक्षर किए थे, इसलिए वह इसे बदल नहीं सकता था। कोई और उपाय न होने के कारण, उसने दानिय्येल को सिंहों की गुफा में फेंकने के लिए कहा, और रात भर दानिय्येल सिंह की गुफा में अकेले प्रार्थना करता रहा। राजा ने दानिय्येल से पूछा कि क्या उसके परमेश्वर ने उसे बचाया है। दानिय्येल ने राजा दारा से कहा, कि परमेश्वर ने अपना दूत भेजकर सिंहों का मुंह बन्द कर दिया, और उन्होंने उसके साथ कुछ नहीं किया। उसके शरीर पर एक खरोंच तक का निशान नहीं था। (दानिय्येल अध्याय 6)



प्रिय युवाओं!

दानिय्येल ने अकेलेपन की भावना के बिना प्रार्थना की, तब भी जब उसे सिंह की मांद में डाला गया था। यहोवा ने दूत भेजकर सिंहों का मुंह बन्द कर दिया। जब आप भी अकेलेपन की स्थिति में आए तो यीशु के साथ जुड़े रहें!

पतरस के प्रश्नों के हुनर

Petra



पतरस के साथ एक यात्रा

भाग - 7

तुम कैसे पूछते हो कि मुझे किसने छुआ?

असामान्य लहू बहने से पीड़ित एक महिला ने इलाज के लिए अपनी सारी संपत्ति व्यर्थ में खर्च कर दी थी। ऐसे में किसी ने गवाही दी कि "यीशु के वस्त्र का स्पर्श चंगाई लाता है।" भीड़ में किसी से अनजान, उसने यीशु के वस्त्र के शीर्ष को छुआ! कितना अद्भुत! तुरंत उसकी पीड़ा बंद हो गई। यीशु ने तुरंत पूछा, "किसने मुझे छुआ?" उनके करीबी शिष्य पतरस को पता होना चाहिए कि जब यीशु किसी चीज के बारे में सवाल करते हैं, तो वह किसी कारण से ही होता है। लेकिन हमेशा की तरह पतरस कार्रवाई के बाद एक विचारक था।



"लोगों की भीड़ आपके आसपास है..तुम कैसे पूछते हो कि मुझे किसने छुआ? (लूका 8:45) क्या यह सामान्य नहीं है कि जब लोग एक विशाल भीड़ से घिरे हों तो एक-दूसरे पर हाथ फेरें?" पतरस ने सभी चेलों की ओर से यीशु से प्रश्न किया लेकिन इसके पीछे, एक महिला का महान विश्वास था, और जिस तरह से उसने इसे प्रदर्शित किया, उसके साथ जो महान चमत्कार हुआ, उस भयभीत महिला के मुंह से एक बड़ी भीड़ के सामने यीशु के नाम की महिमा स्पष्ट हो गई, जो पतरस के सवाल के कारण हुई।

हम किसके पास जाएं?

एक बार यीशु ने अपने 12 शिष्यों से पूछा, "क्या तुम भी जाना चाहते हो?" (यूहन्ना 6:67) वह जानता था कि उनमें से एक उसके प्रारंभिक विश्वास से मुकर जाएगा और उसे पकड़वाएगा। केवल उस घटना की भविष्यवाणी की गई थी कि यीशु के साथ विश्वासघात किया जाएगा, लेकिन यह नहीं बताया गया कि यह कौन करेगा। यही कारण है कि यीशु अपने शिष्यों से यह प्रश्न पूछते हैं। पतरस, जिसे चेलों का प्रवक्ता माना जाता था, एक बार फिर स्वेच्छा से जवाब देने के लिए आगे हुआ। "...प्रभु, हम किसके पास जाएं? हमारे पास आपके अलावा कोई नहीं है।

"पतरस ने यीशु के कहने पर पूरी तरह से विश्वास किया, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ। मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं आता है," और विश्वास में आनंदित था और यही कारण है कि जब यीशु ने उससे प्रश्न किया वह तुरन्त इसे घोषित करने में सक्षम था।

"आपके पास अनंत जीवन की बातें हैं। हम विश्वास करते हैं और जान गए हैं कि तुम जीवित परमेश्वर के पुत्र मसीह हो," उन्होंने कहा। (यूहन्ना 6:68,69)।

ये बातें कब होंगी?

जब यीशु जैतून के पहाड़ की चोटी पर चर्च के सामने बैठे थे, पतरस, यहून्ना, याकूब और अन्द्रियास ने उसके पास आकर पूछा, “ये बातें कब होंगी? तू ने हम से कहा था, कि कलीसिया के भवन ढा दिए जाएंगे, कि किसी के ऊपर एक भी पत्थर न छूटे। इन सब बातों के पूरे होने का चिन्ह क्या होगा? यीशु ने उन्हें बदले में बहुत सी चेतावनियाँ दी। वह उन्हें उन लोगों के बारे में अधिक जागरूक होने के लिए कहता है जो अंत समय के संकेतों का दावा करके धर्म के नाम पर धोखा देते हैं। और यहाँ मसीह, मसीही जीवन की आवश्यक शिक्षाएँ देता है, देखना, प्रार्थना करना और अंत तक धीरज धरना। हमने ज्ञानियों को यह कहते सुना है कि जो अधिक प्रश्न करता है वह सबसे चतुर होता है। इसी तरह, पतरस के प्रश्न सभी के लिए ज्ञान के स्रोत के रूप में कार्य करते हैं।



पतरस की स्मृति कौशल!

जब यीशु बैतनिय्याह से लौटा, तो उसे एक पेड़ मिला जिसमें पत्ते थे और फल नहीं थे। उस ने क्रोध में आकर कहा, कोई तुझ में से फिर कभी फल न खाए। (मरकुस 11:14) उसके शिष्यों ने उसे यह कहते हुए सुना और अगली सुबह उन्होंने पाया कि पेड़ अपनी जड़ों तक सड़ गया था, केवल पतरस ने जो कुछ यीशु ने कहा था उसे याद किया और उसे साझा किया। बदले में, यीशु विश्वास के साथ कहे गए शब्दों की शक्ति का विस्तार करता है।

बाइबल हमें किसी को शाप न देने के लिए कहती है क्योंकि हमारे वचनों में सामर्थ्य है, (रोमियों 12:14)। फिर भी यह एक निर्विवाद तथ्य है कि एक निष्फल मसीह जीवन शापित है।

पतरस की नम्रता और निवेदन!

जब शमौन पतरस एक मछुआरा था, तो उसने यीशु के बैठने और लोगों को प्रचार करने के लिए अपनी नाव दे दी (लूका 5:3), और उपदेश समाप्त करने के बाद, यीशु ने शमौन पतरस से कहा कि गहरे में जाकर मछली पकड़ने के लिए जाल डालो। पतरस ने अपनी असफलता को स्वीकार किया कि पूरी रात उसके प्रयासों के बावजूद कुछ भी नहीं पकड़ा, परन्तु पतरस ने अपने अनुभव की परवाह किए बिना प्रभु के वचनों का पालन किया, और जैसा कि यीशु ने कहा, वह उससे विस्मय में था, और भय के मारे उसके चरणों में गिर गया और यह कहते हुए अपनी नम्रता व्यक्त किया कि, हे प्रभु, मैं एक पापी मनुष्य हूँ, कृपया मुझे छोड़ दें। जैसे ही यीशु ने शमौन पतरस से कहा, “डरो मत, अब से तुम मनुष्यों को पकड़ोगे” और वह तुरन्त यीशु के पीछे हो लिया।

यीशु ने पतरस के पैर धोए!



यीशु का चेलों के पैर धोना एक अनोखी घटना है जो केवल यहून्ना के सुसमाचार में घटित होती है (यूहन्ना 13:3-15)। पुराने नियम के समय में और यहूदियों के बीच, पैर धोने की प्रथा मेहमानों का सम्मान करने, उन्हें स्वयं को शुद्ध करने और दासों को अपने स्वामी का सम्मान करने का प्रतीक चिन्ह था (उत्पत्ति 18:4, 19:2; लूका 7:44), और यहाँ यीशु मसीह अपने आप को एक दास की तरह नम्र करता है और शिष्यों के पैर धोता है। हमेशा की तरह, जब अन्य शिष्यों ने चुपचाप इसकी अनुमति दी, केवल पतरस ने कहा, हे प्रभु, तुम मेरे पैर कभी नहीं धोने पाएगा। पतरस का यह विचार कि, मसीह उससे श्रेष्ठ है, इस कथन से समझा जाता है।

कई और महत्वपूर्ण घटनाओं के साथ पतरस के साथ एक यात्रा जारी रहेगी

प्रार्थना मार्गदर्शक

अगस्त 2022

1 दुनिया भर में 3 करोड़ से अधिक लोग बंधुआ मजदूर हैं। आइए हम इन लोगों की मुक्ति के लिए प्रार्थना करें।

2 एक सर्वे के मुताबिक आधे बंधुआ मजदूर यानी 1.39 करोड़ लोग भारत में रहते हैं। आइए हम प्रार्थना करें कि हमारा राष्ट्र गुलामी-विरोधी राष्ट्र बने।

3 आइए प्रार्थना करें कि खदानों और भट्टियों में ऐसे मजदूरों की कड़ी मेहनत खत्म हो जाए।

4 ये बंधुआ मजदूर अपने कर्ज के चलते ऐसा करने को मजबूर हैं। आइए प्रार्थना करें कि यह स्थिति बदल जाए।

5 पाकिस्तान में 17 लाख बंधुआ मजदूरों में से 7 लाख बाल मजदूर हैं। आइए प्रार्थना करें कि इन बच्चों को सकुशल बरामद किया जाए।

6 आइए हम बाल मजदूरों के लिए प्रार्थना करें जो स्कूल नहीं जा रहे हैं, कि उनके लिए पढ़ाई के अवसर पैदा हों।

7 आइए हम प्रार्थना करें कि भारत से गुलामी की व्यवस्था को पूरी तरह से मिटा दिया जाए।

8 आइए प्रार्थना करें कि इन बंधुआ मजदूरों को बचाया जाए और सरकार द्वारा उनके जीवन को बनाए रखने के लिए आय का कोई अन्य स्रोत प्रदान किया जाए।

9 20% बच्चे अपने माता-पिता के बीच के झगड़ों के कारण मानसिक रूप से परेशान हैं। आइए प्रार्थना करें कि यह स्थिति बदल जाए।



10 विश्व स्तर पर 2.7% बच्चे अपने पिता की शराब के कारण स्कूल छोड़ देते हैं। आइए हम प्रार्थना करें कि वे अपनी पढ़ाई जारी रखें।

11 माता-पिता के चले जाने के कारण 6.5% बच्चे कम उम्र में ही दिहाड़ी मजदूर बन जाते हैं। आइए हम उन बच्चों के लिए उचित सहायता प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करें।

12 वैश्विक स्तर पर 4.2% बच्चों को परिवारों में गरीबी के कारण गुलाम के रूप में बेचा जाता है। आइए हम प्रार्थना करें कि परिवारों में गरीबी बदल जाए।

13 जंगल की आग, अकाल, बाढ़, भूस्खलन, दुर्घटना आदि जैसी आपदाओं के कारण बहुत से लोग अपनी जान गंवा रहे हैं। आइए हम उनकी सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।

14 वर्षा का मौसम शुरू हो गया है, आइए हम प्रार्थना करें कि झीलों और नहरों को खोदकर ठीक से बनाकर रखा जाए।

15 हम प्रार्थना करें कि विद्यालय भवनों का रख-रखाव और अधिकारियों द्वारा ठीक से निरीक्षण किया जाए और दुर्घटनाओं को रोका जाए।

16 आइए हम प्रार्थना करें कि श्रीलंका अपनी आर्थिक मंदी से उबरे और लोगों को बिना किसी बाधा के भोजन और ईंधन की आपूर्ति मिले।

17 आइए हम प्रार्थना करें कि अन्य राष्ट्र, राहत सामग्री उपलब्ध कराकर श्रीलंका को विनाश से बचाने के लिए आगे आएँ।

18 दुनिया भर में 1845 करोड़ लोग मानसिक रूप से बीमार हैं। आइए हम उनके मानसिक बीमारी से मुक्ति के लिए प्रार्थना करें।

19 आइए हम युवाओं में उनके सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को रोकने के लिए मानसिक साहस और स्पष्टता के लिए प्रार्थना करें।

20 आइए हम प्रार्थना करें कि मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान निकाला जाए और लोगों में जागरूकता पैदा की जाए।

21 आइए प्रार्थना करें, की मनोचिकित्सक, सहायक, सामाजिक कार्यकर्ता एक समर्पित सेवा करें और मानसिक रूप से विकलांगों को संरक्षण प्रदान करें।

22 आइए हम प्रार्थना करें कि परमेश्वर मानसिक रूप से बीमारों के परिवारों को धीरज प्रदान करें कि वे प्यार से उनका समर्थन और देखभाल करें।

23 आइए हम प्रार्थना करें की जो मानसिक रूप से बीमार हैं उन्हें उचित उपचार मिले, वे शीघ्र स्वस्थ हों और अपना काम स्वयं करने में सक्षम हों।



युवा जीवन अगस्त 2022

24 हम प्रार्थना करें कि अन्त के समय में झूठे भविष्यद्वक्ता न उठें और विश्वासी टूट न जाएँ।

25 आइए हम प्रार्थना करें कि राष्ट्रों में परमेश्वर के सेवकों के खिलाफ सभी प्रकार के विरोधों को नष्ट कर दिया जाए।

26 हम प्रार्थना करें कि परमेश्वर के प्रत्येक सेवक आत्मा, प्यास और लालसा के बोझ के साथ प्रभु की सेवा करें

27 परमेश्वर के जन की तृप्ति हो, आओ हम सब के लिये पवित्र आत्मा के फलों और वरदानों के लिए प्रार्थना करें।

28 हम प्रार्थना करें कि मंडलियां विश्वास में बढ़ें और प्रभु का वचन प्रारंभिक चर्च की तरह फले-फूले।

29 आइए हम प्रार्थना करें कि चर्चों में 'एकता की भावना' उड़ेली जाए और वे प्रार्थना सभा बन जाएँ।

30 आइए हम प्रार्थना करें कि प्रारंभिक चर्च जैसे, चर्चों और राष्ट्रों में चमत्कारी चिन्ह दिखाई दें।

31 आइए हम प्रार्थना करें कि पुनरुत्थान की आग को मंडलियों में डाला जाए और युवाओं और बच्चों को परमेश्वर द्वारा शक्तिशाली रूप से इस्तेमाल किया जाए।

रेड अलर्ट की इस कड़ी में, हम यहूदा इस्करियोती पर ध्यान देंगे, यीशु मसीह के बारह शिष्यों में से एक, जिसने उसे धोखा दिया था। एक मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर यीशु के समय के दौरान, बहुत से लोग उसके जीवन में चमत्कार और चंगाई और अनुभवी चमत्कार प्राप्त करने के लिए आए थे। यीशु की शक्ति और महिमा को करीब से देखने के बाद भी, यहूदा इस्करियोती ने यीशु को धोखा दिया और अंत में दण्ड का शिकार हुआ। इसका क्या कारण है?

गलत इरादा:

जो चेले यीशु के साथ थे, वे उसके द्वारा चुने गए थे। हालाँकि उनके बीच छोटी-छोटी तकरार और नाराजगी थी, लेकिन उनके इरादे कभी बुरे नहीं थे। परन्तु, बाइबल कहती है कि यहूदा इस्करियोती एक चोर था (यूहन्ना 12:6)। यहूदा केवल नाम और प्रसिद्धि के लिए यीशु के साथ नहीं था, बल्कि वह पैसे की थैली का प्रभारी था। उनकी अभिलाषा सिर्फ पैसे और सांसारिक चीजों के बारे में थी।

यहूदा इस्करियोती ने सुसमाचार का प्रचार किया, लोगों को चंगा किया और दुष्टात्माओं को बाहर निकाला। लेकिन उसका इरादा अच्छा नहीं था और इसलिए शैतान ने उसका इस्तेमाल किया। हम भी विभिन्न प्रकार के सेवा में शामिल हो सकते हैं। लेकिन, यदि हमारा उद्देश्य आत्मकेंद्रित है और परमेश्वर की महिमा नहीं करता है, तो हमारा अंत दुखद होगा।

पैसे का प्यार (लालच):

बाइबल कहती है कि पैसे का प्यार सभी बुराइयों की जड़ है (1 तीमथियुस 6:10)। चूंकि यहूदा के पास पैसे की थैली थी, इसलिए उसका ध्यान मुख्य रूप से पैसे पर था, मरियम ने

JUDAS ISCARIOT RED

यीशु
के पैरों पर

एक महंगा इत्र

डालकर परमेश्वर का सम्मान

किया। उस समय भी, यहूदा का ध्यान उस

धन पर था जो इत्र को बेचकर प्राप्त किया जा सकता

था। यह जानते हुए कि यहूदा की दुर्बलता पैसे के लिए प्रेम थी,

शैतान ने यीशु को धोखा देने के लिए यहूदा को चांदी के 30 टुकड़ों की कीमत देने की पेशकश की। शैतान पूरी तरह से उसमें प्रवेश कर गया।

शैतान हमारी कमजोरियों को जानता है। वह जानता है कि प्रत्येक व्यक्ति को फंसाने के लिए किस प्रकार का जाल फैलाना है।

हो सकता है कि हमें यहूदा की तरह पैसे के लिए प्यार न हो, लेकिन



ALERT

कुछ
और
कमजोरियां हो सकती
हैं। यदि हम अपने कमजोर स्थान
को सुधारने में विफल रहते हैं, तो ऐसा
लगता है कि हमने अपने जीवन में शैतान के काम करने
का द्वार खोल दिया है।

पश्चाताप न करने वाला दिल :

हालाँकि यीशु को पता था कि यहूदा इस्करियोती उसके साथ
विश्वासघात करेगा, उसने उससे कुछ नहीं कहा, लेकिन उसे
पश्चाताप करने के लिए साढ़े तीन साल की पेशकश की। हो सकता
है कि उसने यीशु की सभी शिक्षाओं और उपदेशों को सुना हो,
लेकिन करने के लिए अनिच्छुक था। यीशु के अंतिम घंटों में भी
उसके पास पश्चाताप करने का अवसर था, परन्तु उसका हृदय
पश्चाताप के विरुद्ध कठोर था। हालाँकि उसे अंततः अपने पाप का
एहसास हुआ, फिर भी उसने दोषी अंतःकरण के साथ आत्महत्या

कर ली। उसने इस ज्ञान के बिना कि परमेश्वर उन्हें माफ कर
सकते हैं, अपना जीवन समाप्त कर लिया। हमें उन अवसरों
और मौकों का उपयोग करना चाहिए जो हमें पश्चाताप करने के
लिए मिलते हैं, क्योंकि इस बात का कोई आश्वासन नहीं है कि
फिर से पश्चाताप करने का एक क्षण होगा।
प्रिय युवाओं!

आप जागृति के लिए चुने गए हैं!

हम बचपन से मसीही हो सकते हैं, हम नियमित रूप
से चर्च भी जाते होंगे, लेकिन अगर यीशु के साथ
हमारा व्यक्तिगत संबंध नहीं है, तो हमारा अंत यहूदा
ही के समान होगा। हालाँकि यहूदा साढ़े तीन साल
तक यीशु के साथ रहा, लेकिन वह यीशु को
व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता था। हम अपने जीवन
में किस बात पर जोर देते हैं? यीशु का अनुसरण करने
में हमारा उद्देश्य क्या है? यदि हम स्वयं की जांच और
सुधार करते हैं, तो परमेश्वर हमें जागृति में
शक्तिशाली रूप से उपयोग करेगा!

आइए हम अगले रेड अलर्ट सेक्शन में किसी अन्य व्यक्ति पर
ध्यान करें।

बाइबल में पक्षी

शुतुरमुर्ग



बाइबल में, हम लैव्यवस्था 11:16, व्यवस्थाविवरण 14:15, विलापगीत 4:3, और अय्यूब 39:13 में "शुतुरमुर्ग" शब्द पाते हैं, जो हमें शुतुरमुर्ग के द्वारा अपने पंखों का उपयोग करते हुए तेजी से दौड़ने के बारे में बताते हैं (अय्यूब 39:13)..

- शुतुरमुर्ग दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे भारी जीवित पक्षी है।

- एक नर शुतुरमुर्ग की ऊंचाई 2.5 मीटर तक होती है और मादा शुतुरमुर्ग थोड़ी छोटी होती है।

- इनका वजन 120 से 300 किलोग्राम के बीच होता है और ये तेज दौड़ सकते हैं, लेकिन ये उड़ने वाला पक्षी नहीं हैं।

- उनकी विशिष्टता यह है कि वे 50 किमी प्रति घंटे से 72 किमी प्रति घंटे की गति से दौड़ सकते हैं।

- एक शुतुरमुर्ग का औसत जीवन काल 45 वर्ष होता है।

आइए इस महीने के प्रकरण में शुतुरमुर्ग के तेज दौड़ने के विषय से कुछ बातें सीखें।

- शुतुरमुर्ग में अपनी तेज दौड़ने की क्षमता के कारण शेर और बाघ जैसे जंगली जानवरों के हमलों से खुद को बचाने की शक्ति होती है।

- सीधे दौड़ने पर ही वे दूसरे जानवरों से दूर हो जाते हैं।

- कभी-कभी, जब जंगली जानवर इन पक्षियों पर हमला करते हैं, तो वे सीधे दौड़ना भूल जाते हैं और इसके बजाय वे हलकों में दौड़ना शुरू कर देते हैं। इस वजह से ये अपनी गति खो देते हैं और आसानी से दूसरे जानवरों के शिकार हो जाते हैं।

प्रिय युवाओं!

आपके जीवन की दौड़ के बारे में क्या? कठिन परिस्थितियों के बीच या जब आप समस्याओं से घिरे होते हैं, तो क्या आप सीधे क्रूस तक दौड़ते हैं और यीशु की ओर देखते हैं? या आप परमेश्वर पर भरोसा किए बिना, सीधे मृत्यु के द्वार पर जा रहे हैं, बचने का रास्ता खोजने के लिए?



प्रिय युवा मन! एक उद्देश्य के साथ यीशु की ओर दौड़ना चुनें। आपको वास्तव में जीने का एक रास्ता मिल जाएगा! जैसा कि पौलुस ने कहा, "ऐसा नहीं है कि मैं पहले से ही प्राप्त कर चुका हूं, या पहले से ही सिद्ध हो चुका हूं, लेकिन मैं आगे बढ़ता हूं, कि मैं उसे पकड़ सकूँ, जिसके लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा है।" (फिलिप्पियों 3:12) जिस चीज़ के लिए उसने आपको अलग किया है, उसे पकड़ने के लिए जोर दें!!